कल्याण रागांग का गीतों में प्रयोग

डॉ. हरिओम सोनी
सहायक प्राध्यापक, संगीत
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

'कल्याण एक थाट, राग एवं रागांग है, जो कल्याण अंग के सभी रागों का अधार माना जाता है, कल्याण राग के कई नाम प्रचलित हैं परन्तु वर्तमान समय में इसे यमन राग कहकर संबोधित किया जाता है संगीत के प्राथमिक विद्यार्थी से लेकर वरिष्ठ संगीतज्ञों द्वारा यह राग गाया बजाया जाता है साथ-साथ फिल्मी गीतों एवं अन्य गीत प्रकारों में भी स्वर संयोजन हेतु इस राग का प्रयोग किया गया है। इस राग यमन में तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है परन्तु अन्य गीत प्रकारों में इस शास्त्रीय बंधन से हटकर तीव्र मध्यम के साथ शुद्ध मध्यम का प्रयोग करते हुए स्वर संयोजन किए गए हैं।'

मुख्य शब्द - रागांग, स्वर, कल्याण, गज़ल।

रागांग राग कल्याण, कल्याण के समस्त प्रकारों का आधार राग है। इसमें तीव्र मध्यम के अतिरिक्त अन्य सभी शुद्ध स्वर हैं इसमे गंधार वादी एवं संवादी निषाद है। आरोह अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग होने के कारण इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण एवं एवं गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग की गायकी का विस्तार तीनों सप्तकों में होता है।

इस राग का मुख्य स्वरूप इस प्रकार है:-

सा, नि़ रे ग, ग रे सा नि़ ध़ नि़ रे ग, रे ग म' प, प म ग रे ग, रे ग म' पम'ग रेसा, ग म' ध नि ध प, म' ध नि सां नि ध नि ऽ ध प, प म ग, रे ग, नि रे ग म' पम' रेग सा।

यह शुद्ध राग होने के साथ रागांग राग भी है, उपरोक्त स्वर विस्तार को ध्यान से देखने पर कल्याण राग के रागांग वाचक स्वर समूहों का दर्शन होगा। यथा-

1	नि़ रे ग, रे सा।	2.	ग म' पम'ग रे, गसा ।
3	म' ध नि ध प।	4.	सां नि ध नि, ध पम' ग ।
5	प म' ग म रे सा ।	6	म' प ध प

यमन राग कल्याण थाट का होने के कारण यह राग इस थाट का आश्रय राग माना जाता है परन्तु रागांग की दृष्टि से यह अपने परिवार के समस्त रागों का आश्रयदाता राग है। कल्याण राग के बारे में कुछ विशेष बात यह

है कि इस राग के अनेक नाम प्रचलित हैं जैसे कल्याण, यमन, एमन और ईमन, परन्तु यमन कल्याण इस दो ... से युक्त राग का नाम लेकर प्रदर्शन किया जाये तो इसमें दोनों मध्यम लगाने की प्रथा बन गई है यथा- नि रे ग ... प म' ग, म ग रे ग अथवा प म' ग, रे ग म ग, रे ग रे सा। इत्यादि।"[1]

संगीत के प्रारंभिक विद्यार्थियों को स्वर ज्ञान होने के पश्चात सर्वप्रथम राग यमन की ही शिक्षा प्रदान ... जाती है। संगीत शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम में भी प्राथमिक स्तर पर राग यमन सिखाया जाता है, साथ ही स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रमों में कहीं-कहीं राग यमन को शामिल किया गया है। इस प्रकार प्राथमिक विद्यार्थियों के वर्ग से लेकर पद्म विभूषण और भारत रत्न प्राप्त गायकों तक इस राग का गायन किया जाना इस बात का प्रमाण है कि कल्याण एक बहुत बड़ा राग है जिसका विस्तार अनंत है। इस प्रकार देश के सभी प्रतिष्ठित गायकों एवं वादकों द्वारा ... राग को प्रस्तुत किया गया है।

इस राग की स्वर संगतियों को संगीत के अन्य प्रकारों में भी प्रयोग किया गया है। उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, भाव गीत, गज़ज, भजन एवं फिल्मी संगीत में कल्याण राग की स्वर संगतियों का प्रयोग किया गया है।

जब हम ब्लेक एन्ड व्हाईट फिल्में लगभग 1950 से 1970-80 की फिल्में देखते हैं और उन गीतों को सुनते हैं तो हम पाते हैं कि उन सभी गीतों में शास्त्रीय रागों का बड़ी शुद्धता के साथ प्रयोग किया गया था। इसका प्रमुख कारण यह था कि कुछ गीतों में स्वर संयोजन का कार्य शास्त्रीय संगीतज्ञों के द्वारा किया गया जिनमें प्रमुख रूप से प्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद अल्लारक्खा खाँ ने ए.आर. कुरैशी के नाम से फिल्मों में संगीत प्रदान किया, प्रसिद्ध बांसुरी वादक पं. हरिप्रसाद चौरसिया एवं पं. शिवकुमार शर्मा ने शिव-हरि के नाम से अनेक फिल्मों में संगीत संयोजन का कार्य किया इसका अन्य कारण यह भी था कि इस समय के संगीतज्ञ पाश्चात्य संगीत के प्रभाव में कम थे, साथ ही साथ गीतों में शास्त्रीय वाद्य यंत्रों का प्रयोग प्रमुख रूप से किया जाता था। कुछ गीत इस प्रकार के भी मिलते है जिनमें छोटे ख्याल की बंदिश को ही गीत के रूप में गाया गया है इसी क्रम में स्वर कोकिला लता मंगेशकर जी के द्वारा फिल्म 1952 में आयी फिल्म 'राग रंग' में राग यमन के एक प्रसिद्ध छोटा ख्याल की बंदिश है 'अरी ऐ री आली पिया बिन सखी कल ना परत मोहे घरी पर छिन दिन' गाया गया।

जब किसी किसी भी गीत में गीत के शब्दों एवं गीत के भावों को ध्यान में रखकर उसमें किसी भी राग को पिरोया जाता है तो संपूर्ण राग को समाहित नहीं किया जाता बल्कि आंशिक रूप से राग के उस स्वर समुदाय को प्रयोग किया जाता है जिससे गीत के भाव उभरकर सामने आते हैं कई बार एक से अधिक रागों के स्वर समुदाय एक ही गीत में प्रयोग किये जाते हैं। साथ ही उसी राग के विकृत स्वरों को कई शुद्ध रूप में भी प्रयोग किया जाता है। ऐसा ही राग यमन के साथ भी प्रयोग किये गए है राग यमन की पहचान तीव्र मध्यम है परन्तु कई गीतों में तीव्र मध्यम के साथ शुद्ध मध्यम को भी प्रयोग किया गया है। किसी भी राग की पहचान केवल स्वरों से नहीं होती बल्कि उसका आधार उसके स्वरों की चलन होती है। जैसे इस राग का आरोह-अवरोह है:-

आरोह- सा रे ग म' प ध नि सां।

अवरोह- सां नि ध प म' ग रे सा।

केवल राग के आरोह-अवरोह को ही राग न कहकर बल्कि उसके मुख्य स्वर समुदायों एवं उनके लगाने

ISSN 2395-051X

के तरीके से राग की पहचान होती है जिसे संगीत की भाषा में राग का चलन कहा जाता है। राग यमन में कुछ विशेष चलन है जिनके लगाने मात्र से ही राग यमन का आभास हो जाता है जैसे सबसे पहला स्वर समुदाय है - 'नि़ रे ग' केवल ये तीन स्वर लगाने या गाने से ही राग यमन का अहसास सहज ही होने लगता है अन्य प्रमुख स्वर समुदायों में ग म' पम'ग रे, गसा । म' ध नि ध प। सां नि ध नि, ध पम' ग। प म' ग म रे सा । म' प ध प इस स्वर समुदाय का प्रयोग करते हुए गीत की स्वर रचना की जाए तो वहाँ राग यमन पर आधारित गीत होगा। यहाँ पर राग राग यमन पर आधारित गीत प्रकारों को रेखांकित करने का प्रयास किया जा रहा है:-

फरीदा ख़ानम की सुप्रसिद्ध गज़ल

'आज जाने की जिद् ना करो, यू ही पहलू में बैठे रहो।

हाय मर जायेगें हम तो लुट जायेगें ऐसी बाते किया ना करो।।'

यह गज़ल राग यमन पर आधारित है जिसकी शुरूआत नि़ सा नि़ ध़ नि़ रे म ग नि़ ग रे सा, ग मग मग रे ग रे नि़ रे ग रे कुछ इस प्रकार होती है ठीक इसी प्रकार 'ग म' ध नि सां नि सां, सां नि ध म' सां नि ध नि' यह भी राग यमन का अन्य प्रमुख स्वर समुदाय है जिसमें अवरोह करते समय पंचम स्वर को छोड़ते हुये तार सप्तक के स्वर पर जाते है जिसका प्रयोग अंतरे में 'तुम ही सोचो जरा क्यों ना रोके तुम्हें' यहाँ पर किया गया है।

इसी प्रकार जगजीत सिह की गज़ल:-

'होटो से छू लो तुम मेरा गीत अमर कर दो।

बन जाओं प्रीत मेरे, मेरा गीत अमर कर दों।।'

इस गज़ल में भी ग रे ग रे सा रे सा नि़, नि़ रे ग रे सा, ग म' प ध, ध प म' ग, ग म' प म' ग रे सा रे ग कुछ इस प्रकार के स्वर समुदायों का प्रयोग किया गया है जो कि राग यमन की चलन पर आधारित स्वर समुदाय है अतः यह गज़ल भी राग यमन पर आधारित है।

ज़िन्दगी भर ना भूलेगी वो बरसात की रात।

एक अंजान हसीना से मुलाकात की रात।।

इस गीत में म' ग म' ग रे ग रे ग म' राग यमन के इस स्वर समुदाय के आधार पर इस गीत का स्वर संयोजन किया गया है

अहसान तेरा होगा मुझ पर, दिल चाहता है बो कहने दो।

मुझे तुमसे मुहब्बत हो गई है, मुझे पलकों की छाव में रहने दो।।

इसमें भी प म' ग रे नि़ रे ग कुछ इस प्रकार के स्वर प्रयोग किये गए है जो राग यमन के स्वर हैं।

'जब दीप जले आना, जब शाम ढले आना,

संकेत मिलन का भूल ना जान।

इस गीत नि़ रे ग म' प, प म' ग रे, सा, नि़ रे ग प्रकार में राग यमन के स्वरो का प्रयोग दिखाई देता है

आंसू भरी हैं ये जीवन ये जीवन की राहे,

कोई उनसे कह दे हमें भूल जाए

यह गीत धीमी गति का गीत है जिसमें स्वरों का लगाव ठहरते हुये किया गया संगीत के प्रारंभिक विद्यार्थी यमन को बड़ी ही आसानी से पहचाना जा सकता है जिसमें प्रयुक्त हुए स्वर है-नि़ रे ग म' ग रे म' ग रे, ग प ग, ग रे प म' ग रे सा। इसी प्रकार से मिलता हुआ स्वर प्रयोग एक अन्य गीत प्रकार में देखने को मिलता है

निगाहे मिलाने को जी चाहता है, दिलों-जा-लुटाने को जी चाहता है

वो तोहमत जिसे इश्क कहती है दुनियाँ, बो तोहमत उठाने को जी चाहता है।

यह राग राग यमन का प्रमुख स्वर समुदाय है जिसे गीत के प्रारंभ में ही प्रयोग किया गया है:-नि़ रे ग नि़ रे ग रे सा

बीती ना विताई रैना, बिरहा की जाई रैना।

भीगी हुई पलको से रात ना जाए रैना

यह गीत भी राग यमन पर आधारित है साथ ही साथ इसमें तीव्र मध्यम के साथ शुद्ध मध्यम को भी प्रमुखता से प्रयोग किया गया है जैसे कि पहले उल्लेख किया गया है इस प्रकार के प्रयोग को विद्वान यमन कल्याण की संज्ञा देते है इस गीत के स्वर प्रयोग इस प्रकार है:-प म' ग रे ग रे स ग, म' ग रे ग रे स ग, सा म । इसी क्रम में.

चंदन सा बदन, चंचल चितवन, धीरे से तेरा ये मुस्काना।

मुझे दोष ना देना जब वालो, खो जाउ अगर में दीवाना।।

यह गीत भी राग यमन पर आधारित गीत है जिसमें राग यमन के मुख्य स्वर समुदाय जिसमें पंचम स्वर से लेकर ऋषभ स्वर तक मीढ़ लेते हुये स्वर को लगाया जाता है इस प्रकार का प्रयोग इस गीत प्रकार में देखने को मिलता है:-प प रे सा या प म' ग रे सा यह सभी राग यमन पर आधारित स्वर समुदाय है।

नए गीत प्रकारों में:-

'आये हो मेरे ज़िन्दगी में तुम बहार बनके।

मेरे दिल में यू ही रहना तुम प्यार प्यार बनके।।

यह गीत भी राग यमन पर आधारित गीत है जिसके स्वर कुछ इस प्रकार हैं - सा सा ग रे ग रे सा नि़ ध़ नि़ ग रे ग रे सा कुछ इस प्रकार से प्रयोग किया गया है साथ ही गीत में प म' ग रे, रे ग रे सा नि़ रे सा, इस प्रकार की सरमग का भी प्रयोग किया गया है जो कि राग यमन पर आधारित है।

इस प्रकार पुराने गीतों से लेकर नये गीतों के स्वर संयोजन में राग यमन का बड़ी ही खूबसूरती के साथ प्रयोग किया गया है। जो इस वात का प्रमाण है यह राग संगीतकारों की पहली पसंद का राग है।

संदर्भ :-

1. झा. पं. रामाश्रय, अभिनव गीतांजलि पृ. 170
2. www.yotube.com (गीत श्रवण)